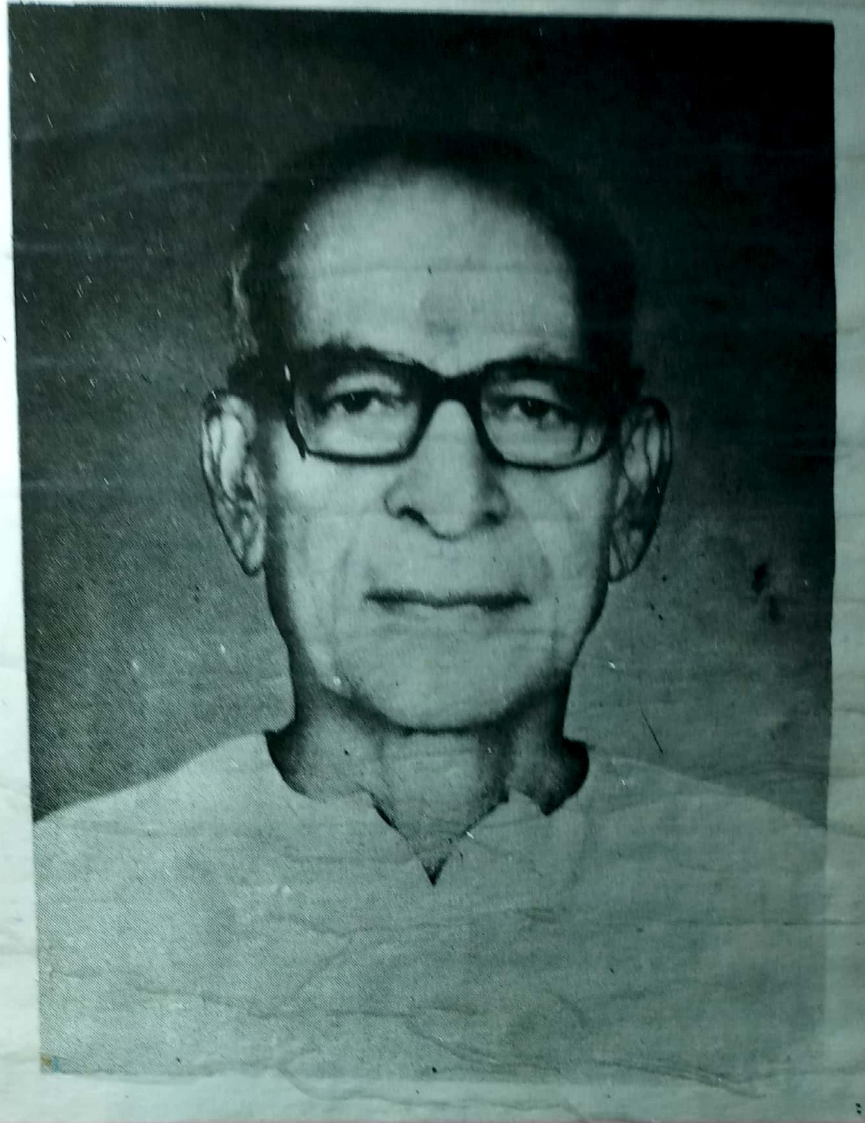


श्रीसुमन साहित्य सौरभ

दत्त-वतीक वस्तु-कौशल

डा० श्रीरामदेवझा

समग्रतामे जीवन, समाज ओ युगक सरस ओ कलात्मक प्रतिविम्बन जाहि काव्य-रूपमे संभव होइछ सैह थिक महत् काव्य—महाकाव्य। कविक कारयित्री प्रतिभा ओ बहुज्ञतासँ समन्वित सर्जन-शक्ति, गम्भीर चिन्तन ओ उदात्त विचार, भाषा-साहित्यक व्यंजना-शक्तिक समवायिक प्रतिफलन होइत अछि महाकाव्यमे। महाकाव्यसँ साहित्य महिमा-मण्डित होइत अछि। अतः महाकाव्यकेँ कोनहु भाषा, साहित्य ओ समाजक प्रौढ़त्वक मानदण्ड मानल जाइत अछि।

मैथिली साहित्य अतीत कालमे विद्यापति-गीत-गंगाक रसधारासँ तेना सिक्त-स्नात होइत रहल जे कतोक शताब्दी धरि कोनहु कविकेँ महाकाव्यक रूपमे दीर्घकाव्यक रचना दिस प्रवृत्तिए नहि भेलनि। अवश्ये अठारहम शताब्दीमे भाषाकवि मनबोधक 'कृष्णजन्म', उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे कवीश्वर चन्दाझाक 'मिथिला भाषा रामायण', बीसम शताब्दीक प्रथम चरणमे कविवर लालदासक 'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण' ओ 'महेश्वर विनोद' 'गणेशजन्म', सदृश दीर्घ काव्यक रचना भेल। ई कृति सब मैथिली साहित्यक गौरव ग्रन्थक रूपमे आदृत अछि। परन्तु भारतीय काव्यशास्त्रमे महाकाव्यक जे लक्षण-निरूपित भेल अछि, जे स्वरूप निर्धारित अछि, नायक-नायिका, कथा-वस्तु, वर्णन-विन्यास ओ रस-योजनाक जे निर्देश देल अछि तकर सभक व्यवस्थित अनुबन्ध एहि काव्य सबमे नहि भेल अछि। तेँ आलोचक लोकनि एहि काव्य सबकेँ वृहत् काव्य, पौराणिक प्रबन्ध इत्यादि कहैत छथि परन्तु महाकाव्य कहबामे संकोचक अनुभव करैत छथि। यदि महाकाव्य कहितहुँ छथि तँ महाकाव्यक परिभाषाकेँ शिथिल करैत।

काव्यशास्त्रमे विहित लक्षणक अनुसरण करैत मैथिलीमे महाकाव्य रूपमे रचित पहिल कृति थिक मुन्शी रघुनन्दन दासक 'सुभद्राहरण'। १९३६ ई० मे मैथिली साहित्य परिषद्क मुजफ्फरपुर-अधिवेशनमे कवि स्वयं एहि महाकाव्यक किछु महत्त्वपूर्ण अंशक पाठ कयने छलाह। एहि अधिवेशनमे पंडित बदरीनाथ झा मैथिलीमे एक महाकाव्य लिखबाक घोषणा कयलनि आ पश्चात् 'एकावली-परिणय'क रूपमे अपन घोषणाकेँ चरितार्थ कयलनि। एकरा पश्चात् अनेक महाकाव्यक रचना होइत रहल, यद्यपि अत्यन्त मन्थर गतिसँ। मैथिली महाकाव्यक क्रमशः विकासमान विटपक शिखर-पुष्प थिक आचार्य श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन' विरचित 'दत्त वती' महाकाव्य।

महाकाव्यक नायक थिकाह मृगांक दत्त ओ नायिक थिकीह शशांकवती। दुहूक समतुल्यताक व्यंजना जे कविकेँ इष्ट छनि तेँ नायक-नायिकाक नामक उत्तरखंडकेँ योजित कऽ काव्यक नाम 'दत्त-वत्ती' राखल गेल अछि। एहि नामकरणक संकेत कवि द्वारा देल गेल अछि, यथा --

अछि मृगांक शशांक पद पर्याय एकहि अर्थगति।
लग्न राशिक दत्त नाम उपाधि युक्तवती स्वमति ॥३२/८
भव-भवानी मृड-मृडानी दम्पती युग-युग जेना।
हो मृगांक-शशांक पद-पर्याय दत्त-वती तेना ॥३१/१६

पचीस सर्गमे निबद्ध 'दत्त-वती' महाकाव्यमे विहित लक्षणक समग्र तत्त्वक सतर्कतापूर्वक निर्वाह कयल गेल अछि। प्रत्युत ई कहबाक चाही जे भामह, दण्डी, रुद्रट, आनन्दवर्द्धन, भोज, वागभट्ट, हेमचन्द्र ओ विश्वनाथ द्वारा निरूपित महाकाव्यक सामान्य लक्षणक संगहि यदि कोनहु आचार्य द्वारा किछु विशिष्ट उपादान निर्दिष्ट अछि तँ तकरहु 'दत्त-वती' महाकाव्यमे कोनहु रूपमे अवश्य समाहार कऽ देल गेल अछि। अतः लक्षणक दृष्टिएँ ई काव्य सम्पूर्ण महाकाव्य थिक।

'दत्त-वती' महाकाव्यक बाह्य संरचना, यथा—सर्गबद्धता, अष्टसर्गाधिक्य, आरम्भमे नमस्क्रियादि, सर्गान्तमे छन्दक परिवर्त्तन, विविध छन्दक प्रयोग इत्यादिक निर्वाह तँ स्वभावतः भेले अछि। अतः एकर सभक सोदाहरण विवेचन-

विश्लेषणक प्रयोजन नहि बूझि पड़ैछ। महाकाव्यक आभ्यन्तर संरचनाक महत्त्वपूर्ण उपादान होइछ ओकर कथानक, नायक-नायिका ओ अन्य पात्र, विविध वर्णन, रस-संयोजन, शैली ओ उद्देश्य। एकरहि सभक चारु ओ समीचीन संयोजनपर महाकाव्यक श्रेष्ठता निर्भर करैत अछि। कविक कल्पना ओ अनुभूति, उद्भावना ओ भाव-सम्प्रेषण, शास्त्र ओ लोकस्वभावक अभिज्ञता, युगचेतना ओ विचारधारा एहि उपादानक माध्यमसँ अभिव्यंजित होइत अछि। एहू सबमे सर्वाधिक महत्त्वक होइत अछि कथानक। कारण, अन्य सब उपादानक आधार वा आश्रय कथानके रहैत अछि।

काव्यवस्तु वा कथानक तीन प्रकारक होइत अछि—प्रख्यात, उत्पाद्य ओ मिश्र। पुराण-इतिहास इत्यादिसँ गृहीत वृत्तकें प्रख्यात कहल जाइछ। कवि द्वारा उद्भावित वृत्तकें उत्पाद्य तथा जाहि कथानकमे प्रख्यात ओ उत्पाद्य दुहूक मिश्रण रहैत अछि तकरा मिश्र कहल जाइछ।

महाकाव्यक कथानक महान् चरित्रसँ सम्बद्ध, सदाश्रय, इतिहासमे प्रसिद्ध होयबाक चाही। आचार्य लोकनि एहि सम्बन्धमे निर्देश देने छथि—

'इतिहास कथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयम्।'
'इतिहासोद्भवं वृत्तं अन्यद्वा सज्जनाश्रयम्।'

'दत्त-वती' महाकाव्यक कथानक ग्रहण कयल गेल अछि सोमदेव विरचित 'कथासरित्सागर' सँ। रामायण, महाभारत ओ अन्यान्य पुराण जकाँ 'कथासरित्सागरो'कें इतिहासक गरिमा प्राप्त छैक। एकरहु कथासबकें प्रसिद्ध आख्यान कोटिमे परिगणित कयल जाइछ। भारतीय वाङ्मयक बहुतो उच्चकोटिक काव्य-नाटकक कथानकक स्रोत यैह ग्रन्थ रहल अछि। संगहि मूल कथानकमे मृगांक दत्ताक चरित्रक वर्णन वीर, साहसी, धैर्यवान सत्पुरुषक रूपमे कयल गेल अछि। अतः 'दत्त-वती' महाकाव्यक कथानक इतिहासोद्भ वृत्त एवं सज्जनाश्रित अछि, ताहिमे सन्देह नहि। परन्तु 'दत्त-वती' महाकाव्यक कथानकक वैशिष्ट्य ओ कविक नवोन्मेषक चारुताक अनुभव मूलकथाकें देखले पर भऽ सकैछ।

'कथासरित्सागर'क द्वादश लम्बकक नाम अछि 'शशांकवती लम्बक'।

एहि लम्बकमे दोसर सँ अन्तिम छत्तीसम तरंग पर्यन्त अवध नरेश अमर दत्तक पुत्र मृगांक दत्त द्वारा उज्जयिनीक राजा कर्मसेनक कन्या शशांकवतीक हरण-परिणयक कथा वर्णित अछि। पिशंगजट मुनि प्रिया-विरहमे विषण्ण भेल नरवाहन दत्ताक समाश्वासन हेतु ई समस्त कथा कहैत छथिन।

अवधक राजा अमरदत्त ओ रानी सुरतप्रियाक पुत्र भेलाह मृगांकदत्त जनिक दस गोट सखा-मन्त्रीं छलथिन—प्रचण्डशक्ति, स्थूलबाहु, विक्रमकेसरी, दृढ़मुष्टि, मेघबल भीमपराक्रम, विमलबुद्धि, व्याघ्रसेन, गुणाकर ओ विचित्रकथ। भीमपराक्रम ओ मृगांकदत्त दूहू स्वप्न देखैत छथि जे उज्जयिनीक राजा कर्मसेनक अनन्य सुन्दरी कन्या शशांकवती मृगांकदत्ताक पत्नी होयथिन। मृगांकक हृदयमे पूर्वानुराग उत्पन्न होइतनि। ओ अपन बुद्धिबलसँ शशांकवतीकेँ पयबाक निश्चय करैत छथि। (तरग—२)। मृगांक समस्त सखासंग महाव्रतीक रूपमे उज्जयिनी जयबाक योजना बनाय भीमपराक्रमकेँ अभिचार सामग्री नरमुडादि संग्रहक आज्ञा दैत छथिन। मुख्यमंत्रीकेँ एकर पता लागि जाइतनि। संयोगात् एक दिन भवनक छतपर स्थित मृगांक द्वारा फेकल पानक पीक नीचाँमे मुख्यमंत्रीक ऊपर पड़ि जाइतनि ओ क्रुद्ध भऽ जाइतथि। ओमहर राजा अमरदत्तकेँ विसूचिका भऽ जाइतनि। मुख्यमत्री प्रतिशोधक उपयुक्त अवसर बूझि राजाकेँ कहैछ जे राजकुमार राज्य-लोभसँ राजापर मारण-मन्त्र आरम्भ कयल अछि आ प्रमाणमे भीमपराक्रमक घरसँ अभिचार-सामग्री बरामद करबैछ। अमरदत्त मन्त्रीक कथनपर विश्वास कऽ मृगांकदत्ताकेँ राज्य-निष्कासनक दण्ड दैत छथिन। मृगांक सखा सहित उज्जयिनी दिस विदा भऽ जाइत छथि। पहिने अपन मित्र किरातराज शक्तिरक्षितक ओतऽ जाइत छथि। ओतऽ अपन उद्देश्य-सिद्धिमे हुनकासँ सहायताक आश्वासन लऽ आगाँ वन-प्रदेशमे बढ़ैत छथि। वनमे शुष्कवृक्षक रूपमे स्थित ब्राह्मण कुमार श्रुतधि शापमुक्त भऽ संग होइत छथिन। श्रुतधि छलाह अवध निवासी दमधिक पुत्र जे बहुत पूर्व अकाल पीड़ित भऽ पिताक संग वनमे आश्रय लेलनि तथा बुभुक्षा-जन्य त्रुटिक कारणे पिताक शापसँ शुष्कवृक्ष भऽ गेल छलाह। आगाँ बढ़लापर पारावत नागसँ शप्त भऽ सखा सब किछु अवधिक हेतु बिछुड़ि जाइत छथिन। एकाकी मृगांक सखाक

अन्वेषण करैत उज्जयिनीक दिशामे आगाँ बढ़ैत छथि। वन-पथमे क्रमशः श्रुतधि ओ विमलबुद्धिसँ मिलन होइत छनि। विमलबुद्धि अपन देखल स्वप्न एवं ओहिमे एक दशभुज सिंहक दसो भुजा टुटबाक ओ सिंहिनीक प्राप्तिक वर्णन करैत छथि जाहिमे मृगांकक सफलताक भविष्य-सूचना अनुमित होइत अछि। (तरंग–३)।

तीनू आगाँ बढ़ैत छथि। मृगांक शबरराज मायाबटुक साहस पूर्वक प्राण बचबैत छथिन। मायाबटु मित्र बनि जाइत छनि तथा अपन मित्र मातंगराज दुर्ग पिशाचक संग सहायताक वचन दैत छनि। ओतहि तान्त्रिक प्रयोगसँ मयूर रूपमे परिवर्तित भीमपराक्रमक उद्धार करैत छथि। (तरंग–४)। मायाबटु केर लोक द्वारा नरबलिक हेतु पकड़ल गेल गुणाकरक सेहो मुक्ति होइछ। (तरंग–५)।

पुनः आगाँ बढ़लापर विचित्रकथ (तरंग–६), एवं प्रचण्डशक्तिक (तरंग–७) मिलन होइछ। मृगांक सँ बिछुड़लाक पश्चात् विक्रमकेसरीकेँ एकटा ब्राह्मण वेताल सिद्ध करबाक प्रेरणा दैत छथिन आ उदाहरण रूपमे प्राचीन राजा त्रिविक्रमसेन द्वारा वेताल-सिद्धिक वर्णन करैत 'वेताल-पचीसी'क कथा कहैत छथिन। विक्रम-केसरी ब्राह्मणक निर्देशानुसार वेताल-सिद्धि कऽ ओकरहि सहायतासँ शशांकक निकट आबि जाइछ (तरंग–८–३२)। आगाँ वृक्षक फलरूपमे परिणत अपन शेष सखा व्याघ्रसेन, स्थूलबाहु, मेघबल ओ दृढ़मुष्टिसँ पुनर्मिलन होइत छैक। (तरंग–३३-३४)

आब सब व्यक्ति उज्जयिनीक निकट पहुँचैत छथि। ओहिठाम उज्जयिनीक रक्षादुर्गक भेदन कऽ भीतर प्रवेश असम्भव जानि ओ मातंगराज दुर्ग-पिशाचक राजधानी जाइत छथि। ओहिठाम मृगांकक संग देबाक हेतु पहिनहि सँ मायाबटु अपन विशाल सेना सहित पहुँचल रहैछ। सभक विचारसँ गुणाकर स्वयं जाय शक्तिरक्षितकेँ सेना सहित बजा अनैछ। सब सेना सम्मिलित रूपेँ उज्जयिनीपर चढ़ाइ करय, ई विचार होइछ। श्रुतधि विचार दैत छथिन जे पहिने दूत पठाओल जाय। सुविग्रह नामक दूत उज्जयिनी जाय मृगांकक संदेश दैत अछि जे कर्मसेन मृगांककेँ परिणय-पूर्वक शशांकवती प्रदान करथि अन्यथा युद्ध अवश्यम्भावी। प्रज्ञाकोश मन्त्री कर्मसेनकेँ पत्र पढ़ि सुनबैत

छथिन। कर्मसेन प्रस्तावके अस्वीकार कऽ युद्धक हेतु सन्नद्ध होइत छथि। ई वार्त्ता जानि मृगांकदत्त ससैन्य युद्धक हेतु प्रयाण करैत छथि। (तरंग–३५)।

मृगांकदत्तक विशाल सेना उज्जयिनीक निकट अबैत अछि। ओमहर सँ कर्मसेन सेहो अबैत अछि। घमासान युद्ध पाँच दिन धरि चलैत अछि। एहि मध्य श्रुतधि गुप्तरूपसँ जाय सूचना अनैत छथि जे शशांकवतीक हृदयमे मृगांकक हेतु प्रेम-भाव उत्पन्न भऽ गेल छनि ओ व्यक्त रूपमे पिताक विजय-कामना हेतु किन्तु वास्तवमे मृगांकके वर रूपमे पयबाक हेतु उद्यानमे स्थित गौरी मंदिरमे आराधना हेतु गेलि छथि। अतः गुप्त रूपसँ राजकुमारीक हरण करबाक मन्त्रणा होइछ। मृगांक रातिमे मित्र सहित नगरक भीतर गौरी मंदिरमे जाइत छथि। गौरी-मन्दिरमे शशांकवती निराश भऽ आत्महत्या कर-बाक चेष्टा करैत छथि। तखनहि गौरीक वाणी सूनि पड़ैत छनि जे अहाँक भावी पति आबि गेल छथि। तखनहि सखी आबि राजकुमारीके रोकैत छनि। मृगांक मित्र सहित ई घटना देखि प्रकट भऽ जाइत छथि। शशांकवती प्रसन्न होइत छथि। मृगांक राजकुमारीके घोड़ापर बैसाय अपन शिविरमे अनैत छथि आ राता-राती सेना सहित मायावटुक नगर चल अबैत छथि। दोसर दिन कर्मसेन ई समाचार जानि पुनः चिन्तन करैत छथि आ दूत द्वारा विवाह-सन्देश पठबैत छथिन जे हमर पुत्री हेतु मृगांकक समान अनुकूल पति के भऽ सकैछ तें ओ उज्जयिनी आबथि आ विधि पूर्वक कन्यासँ विवाह करथि। श्रुतधि कर्मसेनक सदाशयता जानि कुमारके उज्जयिनी जयबाक विचार दैत छथिन। परन्तु मृगांकक विचार होइत छनि जे माता-पिताक बिना विचार लेने ई उचित नहि होयत तें राजा अमरदत्तके बजयबाक हेतु भीमपराक्रम अयोध्या पठाओल जाइत छथि।

अयोध्यामे मृगांकक निष्कासनक पश्चात् अमरदत्तके अपन दुष्ट मंत्री विनीतमतिक दुरभिसन्धिक पता चलि जाइत छनि। ओ परिवार सहित मंत्रीके वध करबा दैत छथिन आ नगरक बाहर विष्णु मंदिरमे सपत्नीक पुत्र-वियोगमे दुखी भऽ निवास करऽ लगैत छथि। ओ पुत्रक संवाद सुनि तुरन्त सेना सहित चलि मायावटुक नगरमे पहुँचि जाइत छथि। एही मध्य अमरदत्तक पुनः

सन्देश अबैछ जे अहाँ तँ उज्जयिनी आयब नहि, तेँ अपन पुत्र सुषेणकेँ पठा रहल छी जे विधिपूर्वक अपन बहिनीक विवाह अहाँक संग करौताह।

अमरदत्त कर्मसेनक सन्देशकेँ सम्मान दैत निश्चय करैत छथि जे विवाह अयोध्यामे सुषेणक उपस्थितिमे सम्पन्न होअय। मृगांकदत्त, शशांकवती ओ अन्यान्य जन अयोध्या चलथि ओ मायाबटु सुषेणक उज्जयिनीसँ अयलापर संग लेने अयोध्या आबथि। तदनुसार अयोध्यामे सुषेणक उपस्थितिमे मृगांकदत्त ओ शशांकवतीक समारोहपूर्वक विवाह सम्पन्न होइछ ओ दुहू प्रेमी-प्रेमिकाक चिरप्रतीक्षित मिलन होइछ। कतोक समय बितलापर मृगांकदत्तक राज्याभिषेक कऽ अमरदत्त पत्नी सुरतप्रियाक संग वाराणसी जाय तपस्यामे लागि जाइत छथि। मृगांकदत्त अपन शौर्यसँ सकल पृथ्वीमण्डलकेँ जीति चिरकाल धरि राज्यक एकच्छत्र सुशासन कयलनि--

'सद्वीपमेतदवजित्य चतुर्दिगन्त—
मेकातपत्रमवनीवलयं शशास'
'अध्यास्य तैश्च सचिवैः सह तामयोध्यां
नानादिगागत नृपार्चित पादपद्मः
सम्राट् समं दयितया स शशाङ्कवत्या
भोगानकण्टक सुखान्बुभुजे चिराय' (तरंग-३६)

'दत्त-वती'मे यैह कथानक मूलरूपमे ग्रहण कयल गेल अछि किन्तु एहिमे कथाक उद्देश्य अत्यन्त उदात्त ओ व्यापक राखल गेल अछि। भारत राष्ट्र, एकर अखण्डता ओ एकताक रक्षा, आभ्यन्तर विखण्डनक प्रवृत्ति ओ बाह्य आक्रमणसँ मुक्तिक हेतु जनचेतनाक जागरण, मानव-धर्मक पालनक संगहि उद्दाम राष्ट्रिय चेतनाक संचार एहि महाकाव्यक इष्ट अछि। एकरहि आलोकमे मूलकथामे अनेक नवीन घटनाक सृष्टि, अनेक नवीन पात्रक सृष्टि, मूलपात्रक कार्य ओ चरित्रमे परिवर्त्तन कयल गेल अछि।

काव्यशास्त्रमे एहि प्रकारक परिवर्त्तनक अधिकार कवि लोकनिकेँ देल गेल छनि। आनन्दवर्द्धनक विचार छनि जे प्रबन्धमे विभाव, भाव, अनुभाव तथा संचारीक औचित्यसँ लालित्यपूर्ण इतिहास प्रसिद्ध अथवा कल्पित कथानकक

निर्माण कयल जाय। इतिहासक ओहन कथांक परित्याग कऽ देल जाय जे रसक अनुकूल नहि हो वा रसक प्रतिकूल सिद्ध हो। प्रबन्धक मध्यमे रसक अनुकूल नवीन कल्पना द्वारा कथानकक संस्कार कयल जाय। एकर अर्थ भेल जे कवि अपन अभीष्ट रसक अनुसार मूल कथानकमे परिवर्त्तन करबाक हेतु पूर्ण स्वतन्त्र छथि—

विभाव भावानुभाव संचार्यौचित्य चारुणः
विधिः कथाशरीरस्य वृत्तस्योत्प्रेक्षितस्य वा
इतिवृत्ति वशायातां त्यक्त्वाऽननुगुणां स्थितिम्
उत्प्रेक्ष्याप्यंतराभीष्ट रसोचित कथोन्नयः

ध्वन्यालोक, ३/१०–११

आनन्दवर्द्धनक निर्देशक अनुसरण करैत रसक अनुकूल कथामे उन्मुक्त भावसँ कल्पनाश्रित कथांशक समावेश 'दत्त-वती' महाकाव्यमे सर्वत्र भेल अछि। मूलकथामे मृगांकदत्त द्वारा शशांकवतीक प्राप्तिक हेतु संघर्षपूर्ण प्रयत्न ओ अन्ततः सफलता वर्णित अछि। ओहिमे वीररसक प्रमुखता अछि अवश्य परन्तु अंगीरस शृंगारे अछि। दत्त-वतीमे मूलक अंगीरस शृंगारकेँ अक्षते नहि राखल गेल अछि, अपितु पूर्वराग, नायिकाक सौन्दर्य, नायक-नायिकाक विरह-वर्णनसँ ओहिमे अतिशय चारुताक सृष्टि कऽ देल गेल अछि। तथापि राष्ट्रचेतना केर सम्पोषण—उद्‌बोधनक महत् उद्देश्यक परिप्रेक्ष्यमे वीररस ततेक व्यापक रूपमे व्यंजित भेल अछि जे शृंगार रस सहजहिं व्याप्त भऽ कऽ वीर-रसक सम्पोषक बनि गेल अछि।

राष्ट्र-चेतनाक हेतु ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अपेक्षित होइते छैक। एहि हेतु अतीत कालमे भारतपर भेल विदेशी आक्रमणक घटनाकेँ ताकल गेल अछि। पतंजलिक 'महाभाष्य'मे प्रदत्त सूचना 'अयोध्यामरुणद्‌यवनः' तथा 'कथासरित्सागर'क अष्टादश लम्बकमे वर्णित उज्जयिनीक राजा विषमशील-विक्रमादित्यक

कथा-प्रसंगमे म्लेच्छक आक्रमण ओ विक्रम द्वारा ओकर विनाशक उल्लेखके[1] पल्लवित कथांशक रूपमे 'दत्त-वती'क मूल कथानकमे योजित कऽ दुइ हजार वर्ष पूर्वक आक्रान्त भारतक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक सृष्टि कयल गेल अछि। एहि तरहें 'दत्त-वती' महाकाव्यक कथानकमे प्रसिद्ध कथा, इतिहास ओ कविकल्पित कथाक मनोरम संगम भेल अछि।

आधार स्रोतक कथानकक 'दत्त-वती'क कथावस्तुक संग तुलना कयने देखल जाइछ आरम्भिक सात सर्गक कथा—मृगांकक जन्म, बालक्रीड़ा, गुरुकुलमे शिक्षा, उज्जयिनीक राजकुमार सुषेणसँ मैत्री, उज्जयिनीमे क्रीड़ा-प्रतियोगिता ओ ताहीमे मृगांक एवं शशांकवतीक परस्पर प्रथम दर्शन; स्नातक भऽ आपस आबि राजशासनमे मृगांकक सहभागिता, सचिवायत्त शासनक दोष-दर्शन, अराजकताक स्थिति, सचिव विमतिक विश्वासघाती चरित्रक आभास, सचिवक संग मृगांकक प्रच्छन्न संघर्ष ओ मृगांकपर राजद्रोहक आरोप नवीन उद्भावना थिक। एहिना बीसम सर्गमे अमरसेनक वानप्रस्थ ओ मृगांकक राज्याभिषेकक पश्चात् पचीसम सर्ग पर्यन्तक घटनाक्रम—दमधिक उपदेश, शासन-व्यवस्था, मृगांक-शशांकवतीक तीर्थाटन, मृगया, पूर्व सचिव विमति ओ ओकर पुत्र विधृति द्वारा लोभ ओ प्रतिशोध भावनासँ प्रेरित भऽ अवध ओ उज्जयिनीपर विदेशी द्वारा आक्रमणक षड्यन्त्र, विक्रमकेसरी द्वारा उज्जयिनीक जन-संघटन ओ रक्षा, अवधमे जनजागरण, सैन्य-संघटन, विदेशी आक्रान्ताक विरुद्ध रण-अभियान, आक्रान्ताक पराजय, देशद्रोहीक अन्त, विजयोत्सव, शकारि विक्रमादित्यक

१. कथासरित्सागर, लम्बक १८—

'म्लेच्छोपद्रव दुःस्थिता'–१७।

'तेजाता म्लेच्छरूपेण पुनरद्यमहीतले'–१९

'म्लेच्छाक्रान्ते च भूलोके निर्वषट्कार मङ्गले' १–२२

'तान् म्लेच्छानुत्सादयिष्यति'–२३

'म्लेच्छान्व्यापादयाशेषांस्त्रयीधर्म विघातिनः'–२९

'म्लेच्छ संघान् हनिष्यति'–३९

'म्लेच्छ संघाश्च निहताः शेषाश्च स्थापिता वशे'–९८

आभास-पूर्वक विक्रमकेसरीक नेतृत्वमे मालव गणतन्त्रक स्थापना ओ अन्तमे दमधि द्वारा राष्ट्रोदयकें विश्वोदयमे एवं यौद्धिकताकें शान्ति-व्यवस्थामे परिणत करबाक उपदेश सेहो कवि-कल्पित कथावस्तु थिक।

आठम सर्गसँ बीसम सर्गक पूर्वांशक कथावस्तु स्थूल रूपमे मूल स्रोतक अनुसरण करैत अछि अवश्य, परन्तु घटना सभक स्वरूप, उद्देश्य ओ उपयोगिता सर्वथा परिवर्तित भऽ गेल अछि। मूलकथाक अद्भुत, अलौकिक, असंभाव्य ओ अस्वाभाविक घटनाकें तर्कसंगत स्वाभाविकता ताहि रूपमे प्रदान कयल गेल अछि जे ओ सभ औपन्यासिक रोचकतासँ परिपूर्ण भऽ गेल अछि।

आचार्य कुन्तक वक्रोक्तिक छओ गोट भेद मानने छथि जाहिमे अन्तिम दुइ भेद प्रकरण-वक्रता ओ प्रबन्ध-वक्रता कहल गेल अछि। एकर स्थिति प्रबन्ध-काव्यमे विशेष रूपें देखल जाइत अछि। प्रबन्धक कोनो घटनाविशेष अपन विशिष्ट चारुतासँ समग्र प्रबन्धमे दीप्ति उत्पन्न कऽ दैछ तँ ओहिमे प्रकरण-वक्रता रहैत अछि। प्रकरण-वक्रता होइछ नओ प्रकारें। एहिमे प्रथम तीन गोट प्रकरण-वक्रताक उपयोग 'दत्त-वती' महाकाव्यमे प्रचुरतया कयल गेल अछि। कवि नायकक चरित्रकें दीप्त करबाक लेल एहन भाव-प्रवण परिस्थितिक उद्भावना करैत छथि जाहिसँ प्रबन्धमे सौन्दर्यक सृष्टि होइत अछि। काव्य-शरीरमे मूलतः जे बात नहि रहैछ तकर कल्पना ओ जे बात रहैछ ताहिमे संशोधन कऽ सौन्दर्य-सृष्टि कयल जाइछ। एहि दृष्टिएँ 'दत्त-वती' महाकाव्यमे प्रकरण-वक्रताक प्रभूत उदाहरण अछि। कथावस्तुक आरम्भ ओ अन्तक कथांश तँ कविक उद्भावना थीके अन्यत्रहु बहुशः प्रसंगमे कविक अभिनव उद्-भावनाक दर्शन होइत अछि। उज्जयिनीक क्रीड़ा-प्रतियोगितामे मृगांक ओ शशांकवतीक प्रथम पारस्परिक दर्शनक घटना समस्त कथानककें प्रभावित करैत अछि। मूल कथामे मृगांकक मन्त्री श्रुतधिक पिता दमधि केर उल्लेख मात्र अछि जकर सम्बन्ध मूल कथासँ नहि। किन्तु 'दत्त-वती'मे दमधि अवधक एक गोट प्रज्ञावान् नागरिके नहि, अपितु नायककें नीति-सम्बन्धी गम्भीर विचारसँ मार्ग-दर्शन करौनिहारक रूपमे प्रस्तुत कयल गेल छथि। प्रतिनायक विमतिक पुत्र विधृति सर्वथा नवीन सृष्टि थिक। विधृति अपन उपस्थिति ओ क्रियाकलापसँ

Scanned by CamScanner

नायक मृगांकदत्तक चरित्रकेँ उत्कर्षता प्रदान करबाक अवसरक सृष्टि करैत अछि। मृगांकक संघर्षमे विधृति प्रतिरोधी बिन्दुक काज करैत अछि। विमति मूलकथामे केवल दुइ बेर उल्लिखित भेल अछि। पहिल बेर मृगांकक विरुद्ध अवध नरेश अमरसेनक मनमे शका ओ क्रोध उत्पन्न कऽ मृगांककेँ निर्वासन दण्ड दियबैत अछि आ दोसर बेर, अमरसेनकेँ जखन वस्तुस्थिति ज्ञात होइत छनि तँ विमतिकेँ सपरिवार मृत्युदण्ड दैत छथिन। किन्तु 'दत्त-वती'मे विमति एकटा कुटिल बुद्धि षडयन्त्री, चतुर, लोभी, स्वार्थी, विश्वासघाती ओ राष्ट्रद्रोही प्रति-नायकरूपमे समग्र प्रबन्धमे विद्यमान रहैत अछि जकरा संग नायक मृगांकक निरन्तर संघर्षसँ हुनक चारित्रिक गुण उत्कर्षताकेँ प्राप्त कऽ सकल। मूलकथामे विद्यमान पात्र, प्रसंग ओ घटनाक संशोधन 'दत्त-वती'मे आदिसँ अन्त धरि देखल जाइछ। विमतिक ऊपर मृगांकक पानक पीक पड़ि गेल छल जकर बदला हुनक निर्वासन द्वारा लेल गेल छल मूल कथाक अनुसार। परन्तु 'दत्त-वती'मे एहि प्रसंगकेँ पूर्ण अर्थवान बना देल गेल अछि। पूर्ण सुयोग्य, वीर, बुद्धिमान, राष्ट्रिय भावनासँ आपन्न, लोकप्रिय राजकुमार मृगांकक उपस्थितिसँ विमतिक अवध राज्यपर अपन अधिकार स्थापित करब सम्भव नहि होइतैक तेँ गम्भीर षड्यन्त्र-रचना कऽ मृगांककेँ हुनक पितेक आदेशसँ निर्वासित करौलक। मूलकथामे अमरसेनक आदेशसँ विमतिक वध सूचित भेल अछि। परन्तु 'दत्त-वती'मे विमति-विधृति राजाउँ क्षमादान पबैत अछि तथापि अन्ततः अपन विदेशी आक्रान्ता मित्रक हाथेँ निहत होइछ। मूलकथामे पारावत एकटा नाग थिक जे मृगांककेँ अपन एगारहो सखाउँ किछु समयक हेतु विच्छिन्न भऽ जयबाक शाप दैछ। 'दत्त-वती'मे पारावत नागजातिक राजा थिक जकरा अपन साहसतँ पराभूत कऽ मृगांक ने केवल प्रेमी तापस-कुमार ओ प्रेमिका नाग-कन्याकेँ पारावतक दण्ड-यातनासँ मुक्त कराय मिलन करबैत छथि, अपितु पारावतकेँ अपन सहयोगी मित्रो बना लैत छथि।

मूलकथाक पारावत नागक शापसँ मृगांकक सखा सब वन-प्रान्तरमे भुतिया जाइछ। सभक संग अद्भुत घटना सब घटित होइछ। क्रमहि-क्रमहि सब पुनः मृगांकक सन्निधिमे आबि जाइछ। 'दत्त-वती'मे एहि घटनाक

बुद्धिसंगत व्याख्या कयल गेल अछि। मृगांक अपन दसो सचिवकेँ शक्ति-संचय ओ भारतवर्षक विभिन्न जनपदक स्थिति-परिस्थितिक आकलन प्रत्यक्ष रूपमे करबाक हेतु विभिन्न दिशामे पठबैत छथि। आ एहि भ्रमण-वृत्तान्तक माध्यमे समग्र भारतक, अखण्ड भारतक प्रत्यक्ष दृष्ट मानचित्र ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

ई सब प्रकरण-बक्रताक भावपूर्ण स्थिति-उद्भावना, उत्पाद-लावण्य ओ विद्यमान-संशोधनक किछु बानगी थिक। एहि प्रकारक प्रकरण-वक्रतासँ समग्र 'दत्त-वती' महाकाव्य समृद्ध अछि। एहि समृद्ध प्रकरण-वक्रतावेँ चारुतर प्रबन्ध-वक्रताक सृष्टि भेल अछि ताहिमे सन्देह नहि।

नाटक, खण्डकाव्य ओ महाकाव्यक समग्र वास्तु-शिल्पक कौशलकेँ प्रबन्ध-वक्रता कहल जाइछ। समस्त प्रबन्धक वस्तु-विन्यासक सौन्दर्य एकरा अन्तर्गत आबि जाइछ। ई छओ प्रकारेँ भऽ सकैत अछि। एहिमे प्रथम अछि मूल रसमे परिवर्त्तन। ई सबसँ महत्त्वपूर्ण अछि। एकरहि अनुकूल कथावस्तुक समग्र संरचना कवि द्वारा निर्मित होइत अछि। कुन्तकक कथन छनि जे—

इतिवृत्तान्यथावृत्त रससंपदुपेक्षया
रसांतरेण रम्येण यत्र निर्वहणं भवेत्
तस्या एव कथामूर्तेरामूलोन्मीलित श्रियः
विनेचानन्दनिष्पत्त्यै सा प्रबन्धस्य वक्रता

कवि अपन नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा द्वारा मूल कथाक रसमे परिवर्त्तन कऽ सहृदय लोकनिक आह्लादकताक सृष्टि करबाक उद्देश्यसँ नवीन रसक योजना करैत छथि। प्रख्यात कथा वा आधार कथामे निहित अंगी रसकेँ बदलि नवीन रसकेँ प्रमुख स्थान देबाक हेतु सम्पूर्ण कथावस्तुमे आमूल परिवर्तन करब अनिवार्य भऽ जाइछ। ई परिवर्त्तन ताहि रूपमे होइछ जाहिसँ अलौकिक काव्य-सौन्दर्यक सृष्टि भऽ सकय।

'दत्त-वती' महाकाव्यमे एहि प्रबन्ध-वक्रताक सफलतम प्रयोग देखल जाइछ। मृगांक-शशांकवतीक मूल कथा सहज रूपमे शृंगार प्रधान अछि। किन्तु 'दत्त-वती'मे मूल रसमे परिवर्त्तन कऽ अंगीरस बनाओल गेल अछि राष्ट्रिय-चेतनासँ

सम्पन्न वीर रस। भारतक अतीत इतिहासक पृष्ठभूमिमे वर्त्तमानक स्थिति ओ वैचारिकताक अभिव्यंजनाक संगहि भारतक अस्मिता, एकता, अखंडताक रक्षाक हेतु त्याग, बलिदान ओ राष्ट्रक प्रति समर्पण-भाव जाग्रत करबाक हेतु राष्ट्रभक्ति पूर्ण वीररसक निष्पत्तिक दृष्टिएँ समग्र कथानकमे परिवर्त्तन कयल गेल अछि। एहि परिवर्त्तनमे कविक वस्तु-रचना-कौशलेक परिचय नहि भेटैत अछि, अपितु कविक सुचिन्तित राष्ट्रिय विचारधारा ओ राष्ट्रभक्तिक प्रखर स्वरूपक सेहो दर्शन होइत अछि। एहि आलोकमे 'दत्त-वती' महाकाव्यक कथावस्तु देखलापर बोध होइछ जे एहि महाकाव्यक स्रष्टा अपन कथा-संरचनाक छोटसँ-छोटो घटनाकेँ अत्यन्त सूक्ष्मतासँ, अत्यन्त बौद्धिकतासँ, अत्यन्त कौशलसँ देखि-परेखि कऽ काव्यक इष्ट-सिद्धिक हेतु योजित कयलनि अछि।

महदुद्देश्यसँ रचित सौन्दर्य-राशिसँ समृद्ध 'दत्त-वती' महाकाव्य मैथिली साहित्यक अद्वितीय ओ अमूल्य निधि थिक।